ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों का रूपान्तरण : समुदाय केन्द्रित दृष्टिकोण

जावेद सिद्दीकी



ग्रामीण स्कूलों की स्थिति

यह भारत की असाधारण उपलब्धि है कि यहाँ के 98% रहवासों में एक किलोमीटर के भीतर प्राथमिक विद्यालय (कक्षा I-V) हैं। आधिकारिक रिकॉर्डों में भौतिक आधारभूत संरचना तक पहुँच नामांकन के साथ 96% से अधिक मेल खाती है। लेकिन ग्रामीण बच्चों को विद्यालयों में लेकर आने की दिशा में अच्छी प्रगति नहीं हो पाई है क्योंकि बच्चों के स्कूल में टिके रहने की संख्या कम है और अधिगम के स्तर भी अपर्याप्त हैं जिसके चलते भविष्य में इन बच्चों के लिए इस बात के अवसर कम हो रहे हैं कि वे अच्छे नागरिक, माता-पिता और अर्थव्यवस्था में योगदान देने वाले सदस्य बन सकें। असर[1] 2016 से पता चलता है कि कक्षा VIII के बच्चों में से 27% विद्यार्थी कक्षा दो के पाठ पढ़ने में असमर्थ थे, लगभग 57% 3 अंकीय संख्या को 1 अंक से भाग देने में असमर्थ थे। कक्षा III में उन बच्चों का अनुपात केवल 42.5% है जो कम-से-कम कक्षा 1 के स्तर के पाठ पढ़ सकते हों।

ट्राँसफॉर्म रूरल इंडिया (टीआरआई) की बेसलाइन ने पूर्व-मध्य भारत के 17 ज़िलों में ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों पर ध्यान केन्द्रित किया जिसके परिणाम और भी ख़राब थे। इसके अलावा यह भी पाया गया कि ग्रामीण स्कूल शायद ही कभी पूरे समय तक खुले रहते हैं। औसतन हमारे यहाँ 25% नियमित शिक्षक और 25% अप्रशिक्षित 'अतिथि' शिक्षक और लगभग 50% स्थान रिक्त होते हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि माता-पिता अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों से बाहर निकाल रहे हैं। ये वास्तव में चिन्ताजनक आँकड़े हैं। हमारे स्कूल बच्चों को बुनियादी कौशलों से लैस करने और अन्तर-पीढ़ीगत गतिशीलता (inter-generational mobility) में स्थिरता स्थापित करने में असफल रहे हैं। ग्रामीण विद्यालयों में अधिकांश बच्चे पहली बार स्कूल जाने वाले शिक्षार्थी हैं और आधे से अधिक माता-पिता कभी स्कूल नहीं गए हैं, स्कूली शिक्षा से उनकी आकांक्षा यह है कि इससे परिवार की प्रगति को आगे बढ़ाने में सहायता मिलेगी। इस प्रकार ग्रामीण विद्यालयों की इस व्यवस्थित उपेक्षा की सामाजिक कीमत चुकाने में परिवार और समुदाय शामिल हैं।

अधिगम के परिणामों की चिन्ताओं से परे, स्कूलों के साथ हमारी भागीदारी की प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि लोकतांत्रिक समाज में बच्चे के भविष्य के जीवन को आकार दिया जा सके। हमारा समाज एक गहन स्तरीकृत समाज है जिसमें व्यापक जाति, वर्ग, लिंग भेदभाव और पदानुक्रम मौजूद हैं; ऐसे में अच्छी तरह से काम करने वाले 'स्कूल' वे मुख्य स्थान हैं जहाँ पर ऐसे नए सामाजिक अनुबन्ध बनाए जा सकते हैं जो स्वतंत्रता, समानता, न्याय और स्वाधीनता के हमारे संवैधानिक मूल्यों पर आधारित हों। बच्चे को स्कूल में अपने परिवार और रिश्ते के अलावा भी नया भाईचारा विकसित करने का मौक़ा मिलता है जो उसकी सहजात क्षमता की मुक्त अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक स्थितियाँ पैदा करता है।

ट्राँसफॉर्म रूरल इंडिया (टीआरआई) के प्रयास

शिक्षा के परिणामों में गुणवत्तापूर्ण जीवन के अन्य आयामों के साथ अन्तरंग और पारस्परिक रूप से मज़बूती होती है। प्राथमिक विद्यालयों में 'प्रारम्भिक अधिगम का संकट' बच्चों की अनुपस्थिति या शिशु विद्यालय की ख़राब गुणवत्ता से सम्बन्धित है, ख़ासकर ग्रामीण बच्चों के लिए जो पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी हैं और जिनके घरों में छपी हुई या प्रिंट सामग्री का अभाव होता है। बहुत से शोध-कार्यों ने पुष्टि की है कि बच्चे का मनो-सामाजिक और संज्ञानात्मक विकास उसके पहले 1000 दिनों के पोषण द्वारा निर्धारित होता है जो आवास, बीमारी, स्वच्छता, घर पर भोजन की उपलब्धता, घर में लिंग समानता जैसे निर्धारकों से जुड़े होते हैं। स्कूलों में आधारभूत परिणामों को प्राप्त करने के लिए हमें अच्छी तरह से काम करने वाले स्कूलों के अलावा सुचारु रूप से चलने वाले ग्राम्य-जीवन की आवश्यकता होगी।

टीआरआई में शिक्षा सम्बन्धी जो प्रयास किए जाते हैं वे, समुदाय के नेतृत्व के साथ, गाँव में बहु-आयामी परिवर्तन के लिए की जाने वाली अपनी व्यापक कार्रवाई के साथ जुड़े हुए हैं। हमारी समझ में हमारे स्कूलों की ख़राब स्थिति के प्रमुख कारणों में से एक है तीन-तरफ़ा विश्वास का अभाव : समुदाय-विद्यालय, स्कूल-शिक्षक और बाल-समुदाय में अलगाव है। टीआरआई एक बहु-विध दृष्टिकोण लेकर इसे सम्बोधित करने के लिए स्थितियों का निर्माण करने का प्रयास करता है। स्कूल और शिक्षकों के उत्तरदायित्व में वृद्धि और बेहतर कक्षा

[1]भारत के सबसे बड़े ग़ैर-सरकारी संगठन प्रथम द्वारा संचालित वार्षिक सर्वेक्षण, शिक्षा रिपोर्ट की वार्षिक स्थिति (एएसईआर) 2005 से।

	तरीक़े	विवरण	सफलता कैसे दिखती है?
	माता-पिता की अन्तःक्रियात्मकता बढ़ाना	यह बच्चे को माता-पिता द्वारा समर्थन देने पर केन्द्रित है, इसमें ये बातें शामिल हैं– ● माता-पिता में शिक्षा और उद्देश्य की समझ का निर्माण ● बचपन से सम्बन्धित वैकल्पिक विचारों और बच्चे को घर में समर्थन देने के लिए माता-पिता को संवेदनशील बनाना ● घर में अधिगम की सामग्री, प्रिंट समृद्ध वातावरण ● माता-पिता एवं बच्चे द्वारा संयुक्त कार्य और प्रस्तुतिकरण	माता-पिता अपने बच्चे के अधिगम में निवेश करते हैं, दिलचस्पी लेते हैं और उनकी मदद करते हैं
	माता-पिता व स्कूल के जुड़ाव को सुदृढ़ करना	यह स्कूल और शिक्षक के साथ माता-पिता के जुड़ाव पर केन्द्रित है, इसमें ये बातें शामिल हैं – ● पीटीए और ऐसी ही अन्य संरचनाओं के माध्यम से, जहाँ भी सम्भव हो अपने बच्चे के बारे में शिक्षक के साथ संवाद करने के लिए माता-पिता का सहयोग करना ● उन्हें अपने बच्चे और उसके अन्य साथियों के अधिगम की उपलब्धि का आकलन करने के लिए तैयार करना ● शिक्षकों व बच्चों की अन्तःक्रिया और स्कूल की गतिविधियों का समर्थन करने के लिए माता-पिता का समूह बनाना	माता-पिता इसका औचित्य समझते हैं और इस पर एक राय है कि उनके बच्चे की परवरिश कैसी हो रही है, यह उन्हें जानना चाहिए। वे स्कूल के वैध मामलों का समर्थन करने में भी आगे बढ़कर रुचि दिखाते हैं।
	(क) स्कूल के साथ स्थानीय समुदायों के जुड़ाव को सुदृढ़ बनाना **(ख)** शिक्षा का समर्थन करने के लिए स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण और उसे बनाए रखना	यह "समुदाय" पर केन्द्रित है जिसमें माता-पिता के अलावा अन्य ग्राम वासी, महिला सामूहिक संस्थाएँ, पारम्परिक सामूहिक संस्थाएँ, पंचायत नेता आदि शामिल हैं और इनमें निम्नलिखित जुड़ाव हो सकते हैं – ● स्थानीय स्कूल के साथ स्वत्व, जुड़ाव, समर्थन और गर्व की भावना का विकास ● स्कूल के बारे में नागरिक समझ जिसमें आरटीई के तहत अनिवार्य बुनियादी अवसंरचना, शिक्षक और सरकार से समर्थन शामिल है ● एसएमसी को सुदृढ़ बनाना – अपनी भूमिका के बारे में सदस्यों की समझ ● गाँव शिक्षा समिति, जनपद शिक्षा उपसमूह आदि का कार्य ● बच्चों को स्कूल भेजने के लिए साथियों का सामाजिक दबाव ● ड्रॉप-आउट बच्चों के साथ सामुदायिक जुड़ाव ● शाम को बच्चों का एक-दो घण्टों के लिए पढ़ना आदि सामान्य मुद्दे हैं ● सामुदायिक स्वयंसेवक – शिक्षा-मित्र/पैरा-शिक्षक द्वारा बच्चों का कक्षा के बाहर/ऑफ़-क्लासरूम समर्थन करना ● शिक्षण प्रोत्साहन केन्द्र, पुस्तकालय, बाल गतिविधि केन्द्र आदि	स्थानीय समुदाय स्कूल के प्रति अपनत्व का भाव रखता है, रुचि रखता है, जुड़ा हुआ है और इसकी अच्छी कार्य पद्धति का समर्थन करता है। शिक्षा के सहायक तंत्र स्थापित करने के लिए योगदान (स्वयंसेवा, वित्त या संसाधन आदि के माध्यम से) देता है।
	शिक्षक प्रेरणा और क्षमताओं में वृद्धि	यहाँ शिक्षक के शिक्षा के मिशन के साथ सम्बद्ध होने पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। इसमें ये बातें शामिल हैं – ● अभिस्वीकृति के लिए औपचारिक तंत्र ● वार्तालाप और सहकर्मी समूह ● शिक्षक संसाधन केन्द्र ● बेहतर कक्षा सामग्री और विधियाँ-वर्क शीट, शिक्षण-अधिगम सामग्री	शिक्षक प्रेरित हैं और कक्षाओं को बेहतर, सार्थक, आकर्षक और सीखने के लिए असरदार बनाने में सक्षम हैं और अपने कार्य का आनन्द ले रहे हैं।

	शिक्षा प्रणाली को सुदृढ़ करना	क्लस्टर और ब्लॉक स्तर पर निगरानी और समर्थन प्रणाली को सुदृढ़ करना; ● नए तरीक़ों की शुरुआत को एक सतत प्रक्रिया बनाने के लिए सीआरसी और बीआरसी बैठकों में भागीदारी ● सीआरसी और बीआरसी की भागीदारी के माध्यम से कार्यक्रम का विस्तार करने के लिए बीईओ के साथ काम करना ● इस बात की ओर शासन और प्रशासनिक संरचनाओं को संवेदनशील बनाना और उन्हें संस्थागत बनाने की दिशा में ले जाना	शिक्षा दफ्तरशाही और स्थानीय तंत्र शिक्षकों, मुख्य अध्यापकों के समर्थनकारी हैं

अनुभवों के लिए शैक्षिक नवाचार लाने की दिशा में काम किया जा रहा है। इसके अलावा लक्ष्यों और जुड़ाव को आकार देने में माता-पिता की आकांक्षाओं और समुदाय की साझा ज़िम्मेदारी और उत्तरदायित्व का सकारात्मक रूप से उपयोग करने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। टीआरआई की शिक्षा क्षेत्र परिषद ने वांछित परिवर्तन लाने के लिए निम्नलिखित रास्तों का विस्तृत विवरण दिया है :

सामुदायिक कार्रवाई के लिए अवसरों का निर्माण करना

पिछले प्रयासों से हमें जो सीख मिली उसके आधार पर हमने अपने नए प्रयासों में समुदाय की भागीदारी को केन्द्र में रखा है। जिन समुदायों को अधिकतर निरक्षर माना जाता है, उन्हें बच्चों के अधिगम में योगदान देने में असमर्थ माना जाता है। इसलिए यह स्कूलों से सम्बन्धित निर्णय लेने की प्रक्रिया से अलग हो गया है। हम स्कूल प्रबन्धन समिति (एसएमसी) और गाँव/पंचायत शिक्षा समितियों जैसे अनिवार्य जुड़ाव से परे जाकर उसे विस्तारित करने का प्रयास कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि समुदाय बच्चों को कक्षा के बाहर समर्थन प्रदान करने, माता-पिता को संगठित करने और गाँव में समर्थनकारी प्रिंट-समृद्ध वातावरण बनाने की ज़िम्मेदारी भी ले। जिस महत्त्वपूर्ण चुनौती को सम्बोधित किया जा रहा है वह है समुदाय का स्वत्व और माता-पिता का स्कूलों के साथ जुड़ाव स्थापित करना जो मौजूदा विश्वास के अभाव को दूर कर सकता है और शिक्षकों के मन में प्रयोजन का भाव ला सकता है। इस प्रकार हमारा प्रयास इस बात पर ध्यान केन्द्रित करता है कि सामुदायिक समूहों, पंचायत और उनके मुखियाओं के साथ काम करके उन्हें स्थानीय स्कूल प्रणाली की ज़िम्मेदारी लेने और उसे मज़बूत करने की ओर प्रवृत्त किया जाए। इसके अतिरिक्त समुदाय में से ही सामाजिक रूप से प्रेरित स्थानीय महिलाओं के एक कैडर को एसएमसी, पीआरआई-मंच जैसे सार्वजनिक प्रणाली इंटरफेस मंचों को प्रोत्साहित करने और समर्थन देने के लिए तैयार किया जा रहा है।

स्कूल के शिक्षकों के साथ समानान्तर जुड़ाव उनकी क्षमता का समर्थन करने और उन्हें समुदाय और पीआरआई से जोड़ने की कोशिश करता है जिससे कि वे उनकी सहायता व समर्थन के साथ अपने कर्तव्यों को पूरा कर सकें। इस प्रकार परिवर्तन का सिद्धान्त **(अ)** 'सामुदायिक कार्रवाई' को शुरू करने **(आ)** माता-पिता की बेहतर भागीदारी **(इ)** शिक्षा प्रणालियों की वितरण क्षमता को मज़बूत करने की ओर ध्यान देता है। परिणाम और सामुदायिक नेतृत्व हमारे दृष्टिकोण के महत्त्वपूर्ण तत्व हैं, विशेष रूप से इसलिए क्योंकि हम यह चाहते हैं कि गाँवों, स्कूलों में हमारी उपस्थिति से परे भी हमारे प्रयास चलते रहें। अधिगम को बढ़ावा देने वाले वातावरण को बनाने वाली प्रक्रिया को संस्थागत बनाने के लिए हमें समुदाय के भावात्मक और प्रभावी जुड़ाव की आवश्यकता है।

इन प्रयासों के लिए समुदाय के साथ जुड़ाव के ऐसे नए तरीक़ों और नए आचारों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है, जो सामुदायिक स्वयंसेवकों की भागीदारी जैसे व्यावहारिक तरीक़ों से समर्थित हों। ऐसा करने के लिए शिक्षा के बारे में उनके दृष्टिकोण निर्माण करना आवश्यक है और साथ ही उन्हें बच्चों के जीवन-तंत्र तथा सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली की ज़िम्मेदारियों को आकार देने में स्कूल की भूमिका की सराहना करनी चाहिए। समुदाय आधारित संरचनाएँ – जैसे संस्थाओं के संघ और अन्य सामूहिक संगठन इस जुड़ाव के केन्द्र बिन्दु हैं। समुदाय में आयोजन और प्रक्रियाओं को महिलाओं द्वारा सुगमीकृत किया जाता है ताकि एक ऐसा वातावरण तैयार हो जो अधिगम को बढ़ावा दे और स्कूल के साथ समुदायों की भागीदारी शुरू हो। जुड़ाव की इस प्रक्रिया को संस्थागत बनाने के लिए उनकी क्षमताओं को मौजूदा कार्यात्मक संरचनाओं के साथ काम करने के लिए मज़बूत किया जाता है जैसे स्कूल प्रबन्धन और ग्राम पंचायत में स्थायी समितियाँ। यह इन संरचनाओं को समुदाय के लिए अधिक पारदर्शी और उत्तरदायी बनाने के लिए एक व्यापक आधार भी प्रदान करता है और इस प्रकार उन्हें स्कूल के विकास की प्रक्रिया में शामिल करता है।

इसके बाद हस्तक्षेप आरम्भ किए जाते हैं जो शिक्षा-विकास की पहल पर काम करने के लिए समुदाय आधारित संरचनाओं की क्षमताओं को विकसित करते हैं। बच्चों, माता-पिता और

सामुदायिक स्वयंसेवकों द्वारा डिज़ाइन की गई गतिविधियाँ स्थानीय समुदाय संगठन द्वारा लागू की जाती हैं, इसके लिए सूचना प्रदान करने की नियमित प्रक्रिया मौजूद है और प्रगति के बारे में समयोचित जानकारी देने की व्यवस्था भी है।

प्रगति

टीआरआई के प्रारम्भिक शिक्षा पायलट मध्य प्रदेश, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल के 11 ब्लॉक में 2017 में शुरू हुए। प्रत्येक ब्लॉक में सामुदायिक सामूहिक संस्थाओं के साथ मिलकर शिक्षा संसाधन संगठन[2] द्वारा भागीदारी की प्रक्रिया की जाती है। मध्य प्रदेश में टीआरआईएफ ने शिक्षकों और सीआरसी के साथ काम करने और इस प्रयास के लिए एक सहायक वातावरण बनाने के लिए राज्य सरकार के साथ औपचारिक समझौता किया है। सभी संसाधन संगठन टीआरआई की शिक्षा क्षेत्र परिषद का हिस्सा हैं जो व्यापक रणनीति को एकीकृत करता है और समय-समय पर प्रगति का आकलन करता है।

इसने पारस्परिक अधिगम, सहकर्मी समर्थन और संयुक्त रूप से कार्य करने के अवसर दिए हैं। संसाधन संगठनों ने काम करने के पाँच तरीक़ों के लिए कार्यक्रम बनाए हैं, प्रत्येक ब्लॉक में स्कूलों की बेसलाइन स्थिति पूरी हो चुकी है जिससे सन्दर्भ-विशिष्ट रणनीतियों और गतिविधियों की जानकारी मिली है। आज 566 गाँवों में 731 समुदाय स्वयंसेवक अपने गाँवों में स्कूलों और ऑफ़-स्कूल प्रक्रियाओं को मज़बूत बनाने में लगे हुए हैं। महिला स्व-सहायता समूहों के मुखिया वाले 192 ग्राम संगठनों ने अपने गाँव के स्कूलों के लिए लक्ष्य निर्धारित किए हैं। 56 ज़िलों में समानान्तर सहायक अधिगम के स्थान जैसे कि पुस्तकालयों और शिक्षण केन्द्रों की शुरूआत की गई है और 110 गाँवों में ग्राम संगठन शिक्षकों का समर्थन करने के लिए बालमेलों का आयोजन करते हैं। सामुदायिक सदस्यों की इस तरह की सक्रिय भागीदारी के साथ 262 स्कूलों में एसएमसी के जुड़ाव को नियमित किया गया है और 176 गाँवों में एसएमसी ग्रामसभा/पंचायत से जुड़ी हुई हैं जहाँ शैक्षिक मुद्दों से सम्बन्धित सरोकारों को नियमित रूप से प्रस्तुत किया जाता है। 319 शिक्षकों के साथ शिक्षक-प्रशिक्षण और विभिन्न क्षमता निर्माण के प्रयास किए गए हैं जिनमें टीएलएम और वैकल्पिक कक्षा-प्रक्रियाओं का प्रभावी उपयोग शामिल है। मई 2018 में शुरू किया गया पहला वार्षिक डिपस्टिक (किसी समस्या के दायरे या गहराई का मापन) अध्ययन यह दिखाएगा कि क्या ऐसा शैक्षिक प्रयास अधिगम के बेहतर परिणाम दे सकता है जो सभी घटकों के साथ-साथ काम करता है जैसे बच्चे, माता-पिता, समुदाय, शिक्षक, स्कूल और जो समुदाय के नेतृत्व वाले बहु-आयामी प्रयास के सन्दर्भ में स्थित हो।

जिस क्षेत्र में यह स्पष्ट रूप से प्रगति कर रहा है वह है स्कूल के कार्यकलापों में समुदाय के सदस्यों की भागीदारी। एक महिला मुखिया ने परिवर्तन की इस इच्छा को पूरी तरह से अपना लिया है-'हम अपने जीवन के बारे में काफ़ी बुरा महसूस करते हैं, काश! हम पढ़ सकते...तो हमें 'गँवार' (अशिक्षित) नहीं कहा जाता, हम नहीं चाहते कि हमारे बच्चों को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़े!' राजस्थान ब्लॉक के देवला गाँव की एक मुखिया रंजिता देवी ने समुदाय के लिए शिक्षा के महत्त्व को इस तरह से व्यक्त किया '...अगर बच्चों में ज्ञान और समझ है तो वे स्वच्छता के साथ जीवन जीते हैं, वे दूसरों के साथ बात कर सकते हैं और समझ सकते हैं कि दूसरे क्या कह रहे हैं। वे गाँव की सीमा के बाहर की चीज़ों को जान और समझ सकते हैं... वे जान सकते हैं कि कौन-सी सरकारी सहायता और योजनाएँ उपलब्ध हैं और इन योजनाओं का लाभ कैसे उठाया जाए।'

सुदूर ग्रामीण विद्यालयों के लिए कुछ आशाजनक संकेत दिखाई दे रहे हैं जैसे कक्षा में बेहतर उपस्थिति, शिक्षकों का स्कूलों और बच्चों के साथ अधिक समय व्यतीत करना, बच्चों के साथ माता-पिता की भागीदारी, शिक्षकों को मान्यता देने के सामुदायिक प्रयास, एसएमसी बैठकों की गुणवत्ता इत्यादि। समुदायों ने संसाधन एकत्रित किए हैं, बच्चों के लिए गतिविधि केन्द्र बनाए हैं और ग्रीष्मकालीन शिविर आयोजित किए हैं। बांकुरा में उत्साहित स्कूल शिक्षकों ने अपने अनुभवों, शिक्षण सम्बन्धी सर्वोत्तम तरीक़ों को साझा करने और अपने लेखन कौशल को पैना करने के लिए स्थानीय पत्रिका शुरू की है। मुकुन्दपुर प्राइमरी स्कूल के शिक्षक लक्ष्मण महतो ने कहा कि 'पत्रिका प्रगतिशील क्षेत्र की आवाज़ बन गई है... नियमित रूप से निकलने वाली इस पत्रिका में इस पूरे क्षेत्र की प्रगति और विचार-शक्ति की आवाज़ बनने की सम्भावना है और यह बात अच्छी शिक्षा का कारण बनने में मदद कर रही है।'

टीआरआई में यह प्रारम्भिक अनुभव हमें ग्रामीण स्कूलों को बेहतर बनाने के लिए अभिसारी (convergent) कार्रवाई की शक्ति में विश्वास दिलाता है।

An Initiative of TATA TRUSTS TRI TRANSFORM RURAL INDIA

[2]Eklavya (http://www.eklavya.in/); Vikramshila (http://www.vikramshila.org/); Prajayatna (www.prajayatna.org); Vidya Bhawan (http://www. vidyabhawan.org/) and Samavesh http://www.samavesh.org/)

जावेद सिद्दीकी एक प्रबन्धक के रूप में, ट्राँसफॉर्म रूरल इंडिया (टीआरआई) के शिक्षा क्षेत्र परिषद का कार्य सम्भालते हैं। वे साझेदारी की शुरुआत और उसे आगे बढ़ाने के लिए ज़िम्मेदार हैं। गहरी समझ तथा ज़मीनी-स्तर की रणनीतिक कार्रवाइयों के लिए फ़ील्ड में सहायता भी देते हैं। प्राथमिक शिक्षा और विकास के क्षेत्र में उन्हें बीस साल का पेशेवर अनुभव है, जिनमें से ग्यारह वर्षों तक उन्होंने भारत भर में ग़ैर-सरकारी संगठनों और राज्य शिक्षा निकायों के अनुसन्धान सहयोगी के रूप में काम करते हुए विभिन्न कार्यक्रमों और परियोजना घटकों का प्रबन्धन किया। टीआरआई फ़ाउंडेशन में शामिल होने से पहले, जावेद ने एकलव्य, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन जैसे प्रमुख संगठनों के साथ विज्ञान-शिक्षा पर काम किया है। उन्होंने सरकारी और ग़ैर-सरकारी संस्थाओं जैसे एससीईआरटी, बीजीवीएस महाराष्ट्र, दूसरा दशक राजस्थान, आर्च, नचिकेता ट्रस्ट आदि के लिए स्रोत व्यक्ति के रूप में भी काम किया है। जावेद ने एशियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट, फिलीपींस से विकास प्रबन्धन में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। इसके अलावा उन्होंने वनस्पतिशास्त्र में स्नातकोत्तर एवं ससेक्स विश्वविद्यालय, यू.के. से अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा और विकास में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है। उनसे *javed@trif.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल